Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ब्रिक्स में भारत रूस सहयोग: बदलती वैश्विक व्यवस्था में रणनीतिक समन्वय

धीरज जायसवाल*

* शोधार्थी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) भारत

प्रस्तावना – इक्कीसवीं सदी की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में वैश्विक शक्ति-संतुलन में निरंतर परिवर्तन दिखाई दे रहा है। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका की उभरती अर्थव्यवस्थाओं का आर्थिक तथा राजनीतिक महत्व बढ़ा है और वैश्विक शासन संस्थाओं में अधिक प्रतिनिधित्व तथा सुधार की मांग भी मजबूत हुई है। इसी व्यापक परिवर्तन की पृष्ठभूमि में ब्रिक्स का विकास एक महत्वपूर्ण बहुपक्षीय मंच के रूप में हुआ। प्रारंभ में आर्थिक सहयोग पर केंद्रित यह समूह धीरे-धीरे वित्तीय सहयोग, विकास, ऊर्जा, खाद्य सुरक्षा, प्रौद्योगिकी, वैश्विक शासन तथा विकासशील देशों के हितों से जुड़े मुद्दों तक विस्तृत हुआ है।

ब्रिक्स की विशेषता केवल इसकी सदस्य संख्या में वृद्धि नहीं, बल्कि इसके भौगोलिक और आर्थिक विस्तार में भी दिखाई देती है। वर्तमान विस्तारित ब्रिक्स में ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, इथियोपिया, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब और इंडोनेशिया शामिल हैं। इस विस्तार ने समूह को एशिया, अफ्रीका, यूरोप से जुड़े यूरेशियाई क्षेत्र, पश्चिम एशिया तथा लैटिन अमेरिका तक व्यापक भौगोलिक आधार प्रदान किया है। इसके परिणामस्वरूप ऊर्जा, खनिज, कृषि, व्यापार, निवेश, विकास वित्त तथा संपर्क के क्षेत्र में सहयोग की संभावनाएँ बढ़ी हैं।

भारत और रूस ब्रिक्स के प्रारंभिक सदस्य रहे हैं और दोनों देशों ने इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। द्विपक्षीय स्तर पर ऊर्जा, परमाणु सहयोग, रक्षा, अंतरिक्ष, व्यापार और विज्ञान-प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में सहयोग के साथ दोनों देशों की ब्रिक्स के भीतर भी कई मुद्दों पर समान प्राथमिकताएँ रही हैं। विशेष रूप से बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, विकासशील देशों की भूमिका, वैश्विक वित्तीय संस्थाओं में सुधार तथा राष्ट्रीय हितों के अनुरूप आर्थिक सहयोग के विषय दोनों देशों के बीच समन्वय के प्रमुख क्षेत्र हैं।

हालाँकि भारत और रूस की सभी अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर समान दृष्टि नहीं है। भारत की विदेश नीति रणनीतिक स्वायत्तता तथा विभिन्न शक्ति-केंद्रों के साथ संबंध बनाए रखने पर आधारित है, जबकि रूस वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में गैर-पश्चिमी तथा बहुध्रुवीय सहयोग को अधिक महत्व देता है। इसके अतिरिक्त चीन के साथ भारत के संबंधों की जटिलता भी ब्रिक्स के भीतर रणनीतिक समीकरणों को प्रभावित करती है। इसलिए भारत रूस सहयोग को केवल द्विपक्षीय संबंधों के रूप में नहीं, बल्कि विस्तारित ब्रिक्स और बदलती वैश्विक व्यवस्था के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

ब्रिक्स में भारत रूस सहयोग एवं रणनीतिक समन्वय – ब्रिक्स में भारत और रूस का सहयोग राजनीतिक एवं सुरक्षा, आर्थिक एवं वित्तीय तथा सामाजिक-सांस्कृतिक एवं जन-से-जन संपर्क के अंतर्गत विकसित हुआ है। दोनों देशों ने ब्रिक्स को केवल वार्ता के मंच के रूप में नहीं, बल्कि वैश्विक दक्षिण की आवाज को मजबूत करने वाले बहुपक्षीय तंत्र के रूप में भी उपयोग किया है। 2025 के भारत रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन में दोनों देशों ने विस्तारित ब्रिक्स के भीतर इन तीनों क्षेत्रों में सहयोग को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई थी।

आर्थिक एवं वित्तीय क्षेत्र में ब्रिक्स की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में नवीन विकास बैंक की स्थापना शामिल है। 2014 में स्थापित इस बैंक का उद्देश्य बुनियादी ढाँचे तथा सतत विकास परियोजनाओं के लिए वित्त उपलब्ध कराना है। बैंक की स्थापना के समय इसकी अधिकृत पूंजी 100 अरब डॉलर निर्धारित की गई थी। वर्तमान में इसका कार्यक्षेत्र प्रारंभिक पाँच देशों से आगे बढ़ चुका है। जून 2026 तक नवीन विकास बैंक ने 141 परियोजनाओं के लिए लगभग 44 अरब डॉलर की वित्तीय स्वीकृति दी थी और भारत इसके प्रमुख लाभार्थी देशों में रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ब्रिक्स का सहयोग केवल घोषणाओं तक सीमित न रहकर विकास वित्त के संस्थागत ढाँचे में भी परिवर्तित हुआ है।

इसी प्रकार आकस्मिक आरक्षित व्यवस्था ब्रिक्स के वित्तीय सहयोग का दूसरा महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसकी प्रारंभिक व्यवस्था 100 अरब डॉलर की थी और इसका उद्देश्य अल्पकालिक भुगतान-संतुलन या तरलता संबंधी दबाव की स्थिति में सदस्य देशों को सहायता प्रदान करना है। इस प्रकार नवीन विकास बैंक जहाँ दीर्घकालीन विकास वित्त से जुड़ा है, वहीं आकस्मिक आरक्षित व्यवस्था वित्तीय स्थिरता के लिए एक सुरक्षा तंत्र के रूप में देखी जा सकती है।

भारत रूस सहयोग इसी व्यापक वित्तीय परिवर्तन के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार में राष्ट्रीय मुद्राओं के उपयोग तथा भुगतान प्रणालियों के बीच अंतर-संचालनीयता पर कार्य जारी रखने की सहमति व्यक्त की है। 2025 के संयुक्त वक्तव्य में वित्तीय संदेश प्रणालियों तथा केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा मंचों के बीच सहयोग की दिशा में भी परामर्श जारी रखने का उल्लेख किया गया। यह प्रयास ब्रिक्स के व्यापक लक्ष्य अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भुगतान के वैकल्पिक और अधिक विविध तंत्र विकसित करने से जुड़ता है।

ऊर्जा क्षेत्र भारत रूस सहयोग का एक अन्य प्रमुख आयाम है। रूस ऊर्जा संसाधनों का महत्वपूर्ण उत्पादक है, जबकि भारत विश्व की प्रमुख ऊर्जा उपभोक्ता अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। इसलिए दोनों देशों के बीच ऊर्जा सहयोग का प्रभाव द्विपक्षीय संबंधों से आगे बढ़कर व्यापक ब्रिक्स ऊर्जा सहयोग से भी जुड़ता है। विस्तारित ब्रिक्स में रूस और ईरान जैसे प्रमुख ऊर्जा उत्पादक देशों के साथ भारत और चीन जैसे बड़े ऊर्जा बाजारों की उपस्थिति इस क्षेत्र में सहयोग की व्यापक संभावनाएँ पैदा करती है।

भारत और रूस ने 2025 के संयुक्त वक्तव्य में खनिज संसाधनों तथा महत्वपूर्ण कच्चे माल में सहयोग को अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं की विश्वसनीयता से जोड़ा। ब्रिक्स में चीन की औद्योगिक क्षमता, रूस की खनिज एवं ऊर्जा क्षमता, भारत की बढ़ती औद्योगिक और तकनीकी मांग तथा ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, ईरान और अन्य सदस्यों के प्राकृतिक संसाधन इस सहयोग को व्यापक आधार दे सकते हैं।

संपर्क और परिवहन भी भारत रूस समन्वय का महत्वपूर्ण आयाम है। अंतरराष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन गलियारा भारत, ईरान और रूस सहित कई क्षेत्रों को जोड़ने की क्षमता रखता है। इसके अतिरिक्त चेन्नई व्लादिवोस्तोक समुद्री मार्ग तथा उत्तरी समुद्री मार्ग जैसे विकल्पों पर भी भारत और रूस ने सहयोग की संभावनाएँ व्यक्त की हैं। 2024 के आर्थिक सहयोग कार्यक्रम में इन मार्गों के माध्यम से माल परिवहन बढ़ाने को प्रमुख प्राथमिकताओं में रखा गया था। इससे स्पष्ट होता है कि संपर्क परियोजनाएँ केवल परिवहन का विषय नहीं हैं, बल्कि व्यापार, ऊर्जा और आपूर्ति श्रृंखलाओं की स्थिरता से भी संबंधित हैं।

भारत रूस संबंधों में कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना दीर्घकालीन तकनीकी और असैन्य परमाणु सहयोग का ठोस उदाहरण है। इसी प्रकार ऊर्जा, विज्ञान, अंतरिक्ष और तकनीकी क्षेत्रों में सहयोग ने दोनों देशों के संबंधों को बहुआयामी बनाया है। 2025 के संयुक्त वक्तव्य में दोनों देशों ने ऊर्जा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, परमाणु तथा अंतरिक्ष सहित अनेक क्षेत्रों में सहयोग की निरंतरता को रेखांकित किया।

ब्रिक्स के भीतर भारत और रूस का सहयोग अन्य सदस्य देशों के साथ संबंधों से अलग नहीं देखा जा सकता। ब्राजील लैटिन अमेरिका की प्रमुख अर्थव्यवस्था और कृषि शक्ति के रूप में महत्वपूर्ण है। चीन की विशाल औद्योगिक तथा व्यापारिक क्षमता ब्रिक्स की आर्थिक शक्ति को प्रभावित करती है। दक्षिण अफ्रीका समूह को अफ्रीकी महाद्वीप में मजबूत आधार देता है, जबकि मिस्र और इथियोपिया अफ्रीकी क्षेत्र की व्यापक भागीदारी को बढ़ाते हैं। ईरान और संयुक्त अरब अमीरात पश्चिम एशिया तथा ऊर्जा एवं व्यापार संपर्क की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। सउदी अरब की ऊर्जा तथा निवेश क्षमता और इंडोनेशिया की दक्षिण-पूर्व एशियाई स्थिति ब्रिक्स के भौगोलिक विस्तार को और व्यापक बनाती है।

राजनीतिक स्तर पर दोनों देश वैश्विक शासन संस्थाओं में अधिक प्रतिनिधित्व तथा विकासशील देशों की भूमिका बढ़ाने की आवश्यकता पर सहयोग करते रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र, जी-20, ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंचों पर दोनों देशों की सक्रियता इस बहुपक्षीय समन्वय को मजबूत करती है। फिर भी भारत और रूस के बीच सभी मुद्दों पर पूर्ण समानता नहीं है। भारत की रणनीतिक स्वायत्तता, पश्चिमी देशों के साथ उसके बढ़ते संबंध तथा चीन के साथ जटिल संबंध ब्रिक्स के भीतर उसकी नीति को प्रभावित करते हैं। इसलिए भारत रूस समन्वय को स्थायी समानता के बजाय मुद्दा-आधारित सहयोग के रूप में देखना अधिक उपयुक्त है।

ब्रिक्स विस्तार: अवसर एवं चुनौतियाँ – ब्रिक्स के विस्तार ने संगठन के आर्थिक, भौगोलिक और राजनीतिक महत्व को बढ़ाया है। नए सदस्यों के आने से समूह के पास ऊर्जा, खनिज, कृषि, जनसंख्या, बाजार और निवेश की अधिक व्यापक क्षमता उपलब्ध हुई है। इसके साथ ही अफ्रीका, पश्चिम एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया की भागीदारी ने ब्रिक्स को अधिक विविध मंच बनाया है।

विस्तार से प्रमुख अवसर व्यापार और निवेश का है। बड़ी आबादी तथा विविध आर्थिक संसाधनों वाले देशों के बीच व्यापारिक संपर्क बढ़ने से नए बाजार विकसित हो सकते हैं। दूसरा अवसर ऊर्जा सुरक्षा से जुड़ा है। रूस, ईरान और पश्चिम एशिया के ऊर्जा उत्पादक देशों की भागीदारी तथा भारत और चीन जैसे बड़े बाजारों की उपस्थिति ऊर्जा सहयोग के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

तीसरा अवसर महत्वपूर्ण खनिजों और आपूर्ति श्रृंखलाओं से संबंधित है। बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था में विश्वसनीय और विविध आपूर्ति श्रृंखलाओं की आवश्यकता बढ़ रही है।

चौथा अवसर विकास वित्त का है। नवीन विकास बैंक के माध्यम से बुनियादी ढाँचे, स्वच्छ ऊर्जा, जल, परिवहन और सामाजिक अवसंरचना में वित्तीय सहयोग बढ़ाया जा सकता है।

हालाँकि विस्तार के साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। सबसे बड़ी चुनौती सदस्य देशों की आर्थिक, राजनीतिक और विदेश नीति संबंधी विविधता है। भारत और चीन के बीच सीमा तथा रणनीतिक मतभेद, विभिन्न देशों के पश्चिमी शक्तियों के साथ अलग-अलग संबंध तथा क्षेत्रीय हितों में अंतर सामूहिक निर्णय प्रक्रिया को जटिल बना सकते हैं। इसलिए ब्रिक्स में सहमति-आधारित निर्णय प्रक्रिया को प्रभावी बनाए रखना महत्वपूर्ण होगा। दूसरी चुनौती संस्थागत क्षमता की है। सदस्य संख्या बढ़ने के साथ अधिक बैठकों, कार्य समूहों और कार्यक्रमों का समन्वय आवश्यक हो जाता है। केवल घोषणाएँ पर्याप्त नहीं होंगीय व्यापार, निवेश, भुगतान, और संपर्क परियोजनाओं को वास्तविक परिणामों में बदलना आवश्यक होगा।

भारत की 2026 की ब्रिक्स अध्यक्षता इस संदर्भ में विशेष महत्व रखती है। भारत की अध्यक्षता के दौरान 30 शहरों में 400 से अधिक बैठकें और कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें आर्थिक, वित्तीय, राजनीतिक, सामाजिक तथा विकास से जुड़े विषय शामिल है।

निष्कर्ष – ब्रिक्स का विकास बदलती वैश्विक व्यवस्था में उभरती अर्थव्यवस्थाओं की बढ़ती भूमिका को दर्शाता है। प्रारंभिक आर्थिक सहयोग से आगे बढ़कर यह समूह वित्त, विकास, ऊर्जा, व्यापार, तकनीक और वैश्विक शासन जैसे व्यापक विषयों पर सहयोग का मंच बन चुका है। इसके विस्तार ने इसकी भौगोलिक तथा आर्थिक क्षमता को बढ़ाया है, लेकिन साथ ही विविध हितों के बीच सहमति बनाए रखने की चुनौती भी बढ़ाई है। भारत और रूस ब्रिक्स के महत्वपूर्ण सदस्य हैं और दोनों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, ऊर्जा, परमाणु, विज्ञान-प्रौद्योगिकी तथा संपर्क संबंधी सहयोग ने ब्रिक्स के भीतर समन्वय को आधार प्रदान किया है। नवीन विकास बैंक, आकस्मिक आरक्षित व्यवस्था, राष्ट्रीय मुद्राओं में भुगतान, महत्वपूर्ण खनिज सहयोग तथा संपर्क गलियारों जैसे विषय भारत रूस सहयोग को ब्रिक्स की व्यापक संस्थागत प्रक्रिया से जोड़ते हैं।विशेष रूप से भारत रूस आर्थिक संबंधों में 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 100 अरब डॉलर तक पहुँचाने

का संशोधित लक्ष्य, राष्ट्रीय मुद्राओं में भुगतान तथा आपूर्ति श्रृंखलाओं में सहयोग भविष्य के महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं।

भारत रूस सहयोग इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है, लेकिन ब्रिक्स की पूरी दिशा केवल इन दो देशों के संबंधों से निर्धारित नहीं होती। विस्तारित ब्रिक्स की सफलता के लिए भारत, रूस, चीन, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका तथा नए सदस्यों के बीच सहमति, पारस्परिक सम्मान और व्यावहारिक सहयोग का संतुलन आवश्यक होगा।

इस प्रकार निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत रूस रणनीतिक समन्वय ब्रिक्स को अधिक प्रभावी बहुपक्षीय मंच बनाने में योगदान दे सकता है, विशेषकर ऊर्जा, विकास वित्त, संपर्क, महत्वपूर्ण खनिज, भुगतान व्यवस्था और वैश्विक दक्षिण से जुड़े मुद्दों में। साथ ही, इसकी सफलता सदस्य देशों की विविध प्राथमिकताओं के बीच व्यावहारिक और संतुलित सहयोग विकसित करने की क्षमता पर निर्भर करेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Ministry of External Affairs. (2025, December 5). *Joint statement following the 23rd India–Russia annual summit*.Prime Minister's Office.Prime Minister's Office.
2. Ministry of External Affairs. (2024, July 9). *Leaders' joint statement on the development of strategic areas of Russia–India economic cooperation for the period up to 2030*.Prime Minister's Office.Prime Minister's Office.
3. Government of India, Prime Minister's Office. (2026, September 12). *BRICS New Delhi Declaration: Building for resilience, innovation, cooperation and sustainability*. BRICS New Delhi Declaration.
4. New Development Bank. (2026, August 11). *Opening remarks of NDB VP&COO Roman Serov for the seminar on the role of the NDB in mobilising private capital in member countries*.New Development Bank
5. Kapoor, N. (2024, December). *Multilateral cooperation in India-Russia ties: A decadal review of BRICS and SCO* (Issue Brief No. 767). Observer Research Foundation.Observer Research Foundation.
6. Government of India, Prime Minister's Office. (2024, July 9). *Joint statement following the 22nd India–Russia annual summit*.Prime Minister's Office.

****